प्राचीन भारत में शिक्षण व्यवस्था

सच्चिदानन्द प्रसाद वर्मा

भारतीय शिक्षा का व्यवस्थित अध्ययन वैदिक काल के आरम्भ से ही हुआ। वैदिक शिक्षा ही भारत की सर्वप्रथम शिक्षा व्यवस्था का रूप माना जाता है। इसके विकास में वेदों का स्थान प्रथम है। वैदिक काल में शिक्षा दो रूपों में प्रचलित थी– प्रारम्भिक शिक्षा, तथा उच्च शिक्षा। प्रवेश के समय बालकों का संस्कार किया जाता था जैसे–विद्यारम्भ, उपनयन। वैदिककालीन शिक्षा के गुरूकुलों में शिष्यों को ब्रह्मचारी कहा जाता था क्योंकि उन्हें ब्रम्हचर्य का पालन करना अनिवार्य था। विद्या अध्ययन की समाप्ति पर बालक का समापवर्तन संस्कार होता था। वैदिक युग में शिक्षा को प्रकाश का वह स्रोत माना गया है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा पथ–प्रदर्शन करती है। इस सम्बन्ध में हम कह सकते हैं कि ज्ञान मनुष्य का तृतीय क्षेत्र है जो उसे समस्त तत्वों के मूल को समझने में क्षमता प्रदान करता है एवं उसे उचित व्यवहार करने के लिये प्रेरित करता है। शिक्षा को अन्तर्ज्योति माना जाता था, जिसे प्राप्त करके मनुष्य संसार के सभी बंधनों से मुक्त होकर जन्म मरण से छुटकारा पा जाता था, अर्थात् मोक्ष पा लेता था क्योंकि इस काल में जीवन का मुख्य लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना था। इस प्रकार वैदिक काल में शिक्षा लौकिक न होकर आध्यात्मिक थी और परम ब्रहम का ज्ञान प्राप्त करने का प्रमुख साधन थी।